ईश्वर

ईश्वर सृष्टिकर्ता है| ईश्वर ना केवल पूर्णतम चिदणु या पुरुषोत्तम हैं, परंतु वे चिदणुओं के भी चिदणु हैं| वे चिदणु- सृष्टि के ऊपर हैं| लाइबनित्ज ईश्वर को परम चिदणु मानते हैं| उन्होंने परम चिदणु को चिदणुओं का सृष्टि करने वाला और पूर्वस्थापित सामंजस्य का स्थापक भी माना है| यह सृष्टिकर्ता निरंकुश सम्राट नहीं है, किंतु स्वयं भी अपने एकतंत्रता के नियम से बदध है| ज्ञानतंत्र होने के कारण यह स्वतंत्र है| यह ना अतंत्र है ना परतंत्र| यह ब्रूनो या स्पिनोजा के ईश्वर के समान सृष्टि- स्वरूप ना होकर देकार्त कि ईश्वर के समान सृष्टि- कर्ता है| इसको लाइबनित्ज अपने " पर्याप्तकारणता नियम" से सिद्ध करते हैं| इस नियम के अनुसार वही वस्तु सत्य मानी जा सकती है जिसकी सत्ता के लिए पर्याप्त कारण या यथेष्ट हेतु विद्यमान हो| प्रत्येक वस्तु की सत्ता का पर्याप्त कारण होना चाहिए| यह कारण वस्तुओं की कार्य कारण श्रृंखला में नहीं मिल सकता क्योंकि इस प्रकार चलते रहने पर अन अवस्था दोष आता है| अंतिम कारण पर, जिसका कोई अन्य कारण ना हो, रुकना पड़ता है| यह स्वयंभू जो अपना कालृरण स्वयं है और सृष्टि की कार्य कारण श्रृंखला से परे है, ईश्वर है| इस प्रकार सृष्टिकर्ता की सिद्धि के लिए पर्याप्त कारण विद्यमान है| लाइबनित्ज का ईश्वर देकार्त के ईश्वर के समान सृष्टि कर्ता तो है, किंतु जिस अर्थ में देकार्त ईश्वर को ' सृष्टि के पार' मानते हैं लाइबनित्ज उस अर्थ में नहीं| लाइबनित्ज के अनुसार ईश्वर, माधवी बुद्धि के पार होने के कारण, सृष्टि के पार हैं| ईश्वर हमारी अपेक्षा पर हैं, जैसे हम पशु की अपेक्षा पर हैं या जैसे पशु वनस्पति और जड़ जगत की अपेक्षा पर हैं| " पर" का अर्थ है " ज्ञान का अधिक विकास"| ईश्वर सब के ऊपर या पर हैं क्योंकि उनका ज्ञान पूर्ण विकसित है|

सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और पूर्णतम ईश्वर की यह सृष्टि भी सर्वोत्तम है| इससे उत्तम जगत की सृष्टि नहीं हो सकती थी, अन्यथा ईश्वर अवश्य उसे सृष्ट करते| लाइबनित्ज का मानना था कि समस्त चिदणु- जगत चित् शक्तिमान ईश्वर की विविध रूपों में प्रतीति या आभास मात्र हैं| चिदणुओं कि स्वतंत्र सताया शक्ति नहीं हो सकती| चिदणुओं का भेद व्यावहारिक है, परमार्थिक नहीं| सभी चिदणु ईश्वर के विभिन्न प्रतिबिंब हैं| सब सापेक्ष हैं, निरपेक्ष नहीं |

लाइबनित्ज चिणुओं के तारतम्यता का वर्णन करते हुए कहते हैं- चिदणुओं को हम पांच श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं| वस्तुतः प्रत्येक चिदणु की अपनी अलग ही श्रेणी है; क्योंकि प्रत्येक चिदणु का ज्ञान अपनी विशेषता रखता है और दो चिदणुओं मैं विश्व का प्रतिबिंब बिलकुल एक जैसा नहीं हो सकता| विश्व में ना अनावश्यकता है ना पुनरावृति| प्रत्येक चिदणु का अपना अलग विश्व है| अत: उतनी ही श्रेणियां हैं जितने चिदणु, किंतु फिर भी समान प्रतिबिंबो के आधार पर स्थूल रूप में पांच श्रेणियां बताई गई है- प्रथम श्रेणी में आते हैं और अचेतन (अर्थात ईशत- चेतन) चिदणु जिनको लोक में 'जड़ जगत' कहा जाता है| इनमें चैतन्य सुप्त या मूर्छित रहता है| यह चैतन्य का क्षीणतम स्तर है; क्योंकि इसमें क्षीण तम संवेदन मात्र होता है| द्वितीय श्रेणी है उपचेतन चिदणु कि, जिस लोक में 'वनस्पति जगत' कहा जाता है| इसमें चैतन्य स्वप्न स्थित सा रहता है| क्षीणतर संवेदन का स्तर है जहां प्राण स्पंदन होने लगता है| अचेतन चिदणु और उपचेतन चिदणु दोनों को लाइबनित्ज ने ' साधारण या नग्न चिदणु नाम दिया है| तृतीय श्रेणी में आते हैं चेतन चिदणु जिनको लोक में ' पशु जगत' कहां जाता है| इनमें चैतन्य जागृत रहता है| यह स्तर क्षीण ज्ञान और स्पष्ट संवेदन का है, अतः इसे क्षीण- स्पष्ट स्तर कहा है| यह सहज मानसिक प्रवृत्तियों का स्तर है| यहां चिदणु ' जीव' कहे जाते हैं| चतुर्थ श्रेणी है स्वचेतन चिदणु की, जिससे लोक में ' मानव जगत' कहा जाता है| यह 'आत्मा जगत' है| यह स्पष्टतर ज्ञान का स्तर है; क्योंकि यहां चेतन स्वचेतन बन जाता है| पंचम और अंतिम श्रेणी में केवल एक ही चिदणु है- वह है परम चिदणु या ईश्वर जिनका ज्ञान स्पष्टतम है| यह 'दिव्य जगत' है| यह ' पुरुषोत्तम' का स्तर है| यह सब श्रेणियां परस्पर संबद्ध हैं| ऊपर की श्रेणी में नीचे की सब श्रेणियां आ जाती है| कोई वस्तु छूटती नहीं| नीचे की श्रेणी का आदर्श ऊपर की श्रेणी में जाना है| इन श्रेणियों में केवल विकास का भेद है, जातिगत भेद नहीं है| यद्यपि सभी चिदणु अपनी शक्ति के केंद्र हैं, तथापि वस्तुतः स्वतंत्र तो केवल स्वचेतन चिदणु हैं| स्वातंत्र्य का अर्थ लाइबनित्ज भी स्पिनोजा के सामान, ज्ञान -तंत्रता मानते हैं| स्वतंत्र का अर्थ है ज्ञान -तंत्र अर्थात ना अस्वतंत्र और ना परतंत्र और यह आत्मा- चिदणुओं मैं ही संभव है| सभी चिदणुओं का लक्ष्य है सर्वोत्तम चिदणु या ईश्वर के समान बनना| जैसे-जैसे चिदणु इस लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं वैसे वैसे वे अधिक ज्ञान तंत्र और उच्चतर होते जाते हैं अधिक विकसित और सक्रिय होते जाते हैं| इस प्रकार लाइबनित्ज ने चिदणुओं के तारतम्यता का वर्णन करते हुए ईश्वर को परमचिदणु कहा है और चिदणुओं की तारतम्यता के क्रम में पांचवीं श्रेणी में रखा है जिसे उसने पुरुषोत्तम का स्तर कहा है| उसके अनुसार पंचम और अंतिम श्रेणी में केवल एक ही चिदणु है और वह है ईश्वर या परम चिदणु| लाइबनित्ज सृष्टि के सामंजस्य का कारण ईश्वर को ही माना| ईश्वर ने चिदणुओं की सृष्टि की है| उन्होंने सबको स्वतंत्र बनाया है किंतु सबको एक तंत्र में बांध दिया है| सारे चिदणु एक ही चेतना के सूत्र में बंधे हैं जिसकी अभिव्यक्ति प्रत्येक चिदणु अपने स्वतंत्र और विशिष्ट रूप में करता है| ईश्वर ने पहले ही सृष्टि में यह सामंजस्य स्थापित कर दिया है|

देकार्त देह और आत्मा को दो स्वतंत्र द्रव्य मानकर उसमें क्रिया प्रतिक्रिया संबंध माना| स्पिनोजा ने इनको एक ही द्रव्य के गुण मात्र मानकर

इनकी दो समानांतर धाराएं बतलाए| लाइबनित्ज ने कहा कि ना तो यह तो फिर द्रव्य है और ना यह तो दो भिन्न गुण हैं जो समानांतर हो| इनमें ना तात्विक भेद है, ना गुण, यह तो एक ही चैतन्य की जागृत और सुप्त अवस्थाएं हैं| लाइबनित्ज के अनुसार ईश्वर समर्थ है और उन्होंने एक ही बार पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम बना दिया जिसके अनुसार यह सदा चलते रहते हैं और ईश्वर को बार-बार हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं रहती|